वैश्विक आर्थिक मंदी तथा उसके भारतीय अर्थव्यवस्था पर हुए प्रभाव

*प्रा. डॉ. रमेश प्र. जोशी

प्रस्तावना–इस वैष्विक सुस्ती का सर्वाधिक प्रतिकुल प्रभाव आफ्रिकी, केंद्रीय एवम् पूर्व लॅटीन अमेरिका देषोंपर पडा हुआ है. तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था जैसे की भारत तथा चीन पर वैष्विक मंदी का प्रभाव अपेक्षाकृत कम रहा है. सकल रूप से वैष्विक सकल घरेलु उत्पाद के वर्ष 2009 में घटकर 2.9 प्रतिषत रहने की संभावना है, तथा विष्व व्यापार में 10 प्रतिषत की कमी आ सकती है. एषिया में वैष्विक मंदी का सबसे घातक प्रभाव थायलॅंड पर पडा है. विष्वबैंक की आषंका है की, सन 2009 में विकासषील देषोंमें विदेषी प्रत्यक्ष निवेष में 30 प्रतिषत की गिरावट आ सकती है. कुछ विद्वानों का यह मत है की, यह समझ लेना चाहिए की, इसके जैसा संकट इसके पहले कभी पैदा नही हुआ है. वैष्विकरण ने इस मंदी को सारे विष्व में फैलाने में अपना योगदान दिया है. अर्थषास्त्रीयोंके मतानुसार मुद्रास्फीती ऋणात्मक हो सकती है, लेकिन मुद्रा संकुचन नही. वैष्विक मंदी का संकट षिखरपर पहुंच चुका है. सितंबर, अक्तूबर 2008 में जब अमेरिका के वित्तीय क्षेत्र की नामी, गिरमी कंपनियॉं दिवालिया होने लगी या बिकने लगी तथा विकसित देषों सहीत भारत में षेअरों की किमतों में भारी गिरावट हुई. भारत में मुंबई स्टॅाक एक्चेंज का संवेदी सूचकांक 22000 के स्तर से गिरकर कुछ ही दिनों में 9000 के स्तर पर पहुॅंच गया. षेअर बाजार में गिरावट का दौर आते ही विदेषी संस्थागत निवेषकों ने बडे पैमाने पर बिकवाली प्रारंभ कर दी तथा कुछ ही दिनों में भारत से करोंडो डॉलर की पूंजी पलायन कर गई. इसके परिणाम स्वरूप उद्योगोंकी कार्यकुषलता में गिरावट तथा बेरोजगारी जैसे गहरे संकटों का खतरा बन गया. वैष्विक सुस्ती के कारण निर्धन देषोंके बेरोजगारी तथा बडी संख्या में लोगोंके निर्धनता मकडजाल में फस जाने की आषंका बनी हुई है. संभवतः विगत दो दषकों में ऐसा पहली बार हुआ है की, निरपेक्ष तथा सापेक्ष निर्धनता दोनों के प्रसार में वृध्दी हो रही है.

पध्दती (Methods) :- प्रस्तुत षोध निबंध के लिए संषोधन की द्वितीयक पध्दतीका उपयोग किया गया है. किताबों, मॅगझीन, न्यूज पेपर तथा संदर्भ ग्रंथों से समस्त जानकारी संकलित कर उसका यथोचित उपयोग किया गया है.

वैश्विक मंदी के संकट के लिए उत्तरदायी कारण:- वित्तीय बाजारोंके धराषायी होने तथा वैष्विक मंदी का मूल 2003–04 की तेजी में छिपा हुआ है. इस अवधी में वैष्विक विकास दर 5 प्रतिषत हुई थी जो 1970 के दषक के बाद से सर्वाधिक पोषनिय दर रही है. इस समय विकासषील देषोंके पूंजी प्रवाह में रिकॉर्ड स्तर की वृध्दी दर्ज हुई है.

वैश्विक मंदी के लिए निम्नकारण उत्तरदायी है :-

1. ***पुर्नभुगतान क्षमता के आकलन के बिना बडे पैमाने पर उधार देनाः***– वैष्विक मंदी के लिए जिम्मेदार तत्वोंमें प्रमुख यह है की, अमेरिका जैसे देष में बडे बडे उद्योगों को उनकी पुर्नभुगतान क्षमता का स्पष्ट आकलन किए बिनाही उन्हे अधिक ऋण या उधार दिया गया. जिसके कारण ऐसे ऋणों की अदायगी एक बडी समस्या बन गयी. पिछले कुछ वर्षों के दौरान अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अपने आपको ऋण देने की नीतिपर केंद्रित कर लिया गया. जिसमें अधिकतर हिस्सा आवास ऋण का था. लोगोंको मुक्त भावसे ऋण बाटनें का परिणाम यह हुआ की, ऋणों की वसुली पूर्ण नही हुई और बैंक तथा वित्तीय संस्थान डूबने लगे.

2. ***कमजोर निवेश निर्णयन*** :- वैष्विक मंदी का एक कारण गलत तरीकेसे निवेष निर्णयन है. अमेरिकी उद्योगपतीयों और वित्तीय संस्थानों ने विकासषील देषोंमें भारी निवेष किया था. उन्होंने अपनी पूजी हटाने से इन विकासषील देषों की परियोजनाऍं और आद्योगिक गतिविधीयॉं रुक जानेसे भी आर्थिक संकट बढता गया.

3. ***निजी वास्तविक ब्याजदरों एवम् पर्याप्त तरलता के बारेमें अतिविश्वास तथा सुखाभास*** :- मंदी के लिए जिम्मेदार एक कारण यह है कि ऋणों की नीची ब्याजदरे और पर्याप्त तरलता की ओर दुर्लक्ष किया जाना है, सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों का अतिविष्वास तथा सुखाभास में रममाण होना है.

4. ***बैंक प्रशासन की दुर्बलताएँ*** :- वैष्विक मंदी का एक प्रमुख कारण यह है कि, बैंकिंग प्रषासन की लापरवाही तथा निर्णय लेने की कठोर क्षमता का अभाव होना है. अचानक उत्पन्न हुए इस संकट ने बैंको तथा वित्तीय संस्थानों के अस्तित्व पर गहरा प्रष्नचिन्ह लगा दिया है. दिसंबर 2007 से उत्पन्न सबप्राईम संकट के चलते अमेरिका के लगभग 20 बडे वित्तीय संस्थान दिवालियॉं हो चुके है. अमेरिकी वित्तीय संस्थानों को सॉस लेनाभी मुष्किल हुआ है.

5. ***यूज अॅन्ड थ्रो वाली नीति*** :- वैष्विक मंदी का अध्ययन किया जानेपर यह प्रष्न उठता है कि, इस वित्तीय संकट

*श्री संत गाडगेबाबा हिंदी महाविद्यालय, शास्त्री विद्यानगर संकुल, शिवाजीनगर, भुसावल

के लिए कौन जिम्मेदार है? इस प्रष्न के जबाब में यह कहना उचित होगा कि, अमेरिका और युरोप कें देषोंकी नीति युज ॲन्ड थ्रो कि है, इसके अलावा कुछ भी नही है. जबतक काम आया तो पुरी दुनिया में उदारीकरण का ढिंढोरा पिटा और खुली वैष्विक अर्थव्यवस्था की वकालत की, जब अपना उद्देष पुरा हुआ तो संरक्षणवाद अपनापर विकासषील देषोंको डूबने के लिए भगवान भरोसें छोड दिया.

6. *वृहत आर्थिक असंतुलन* :- अमेरिकी तथा युरोपियन देषोंमें आर्थिक असंतुलन होने से अनेक आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हुई है. इसके परिणाम स्वरूप यह अर्थव्यवस्थाए स्वयं ही अपने मकडजाल में फस गयी है, ऐसा कहना अनुचित नही होगा.

7. *नियंत्रण का अभाव* :- वैष्विक मंदी के कारणों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, विनियामक असफलताए जिम्मेदार है. अमेरिकी तथा युरोपियन देषोंमें बैंकिंग और वित्तीय संस्थानोंकी कियाकलापोंपर उचित नियंत्रण अर्थात विनियामक व्यवस्था न होने से यहॉ बैंकिंग प्रणाली बेकाबू हो गयी और वैष्विक मंदीसे गंभीर समस्या का उद्‌गम हुआ है.

8. *देशोंकी निर्भरता* :- वैश्विक मंदी का एक कारण यह है कि आज विश्व का प्रत्तेक देश किसी न किसी रुप से अमेरिकी अर्थव्यवस्था से जुडा हुआ है, इसके परिणामस्वरूप अमेरिकी मंदी की मार इन देशोंकोभी झेलनी पडी है.

इस तरह से मंदी के कई कारण बताये जा सकते है.

वैश्विक मंदी के परिणाम :- अमेरिका से षुरू हुई मंदी के अमेरिका, युरोपियन देषोंके साथसाथ भारत जैसे विकासषील देषोंकी अर्थव्यवस्थापर गंभीर दुष्परिणाम हुए है. इन परिणामोंकी चर्चा निम्न प्रकार से की जा सकती है.

1.*औद्योगिक उत्पादन में गिरावट* :- वैष्विक मंदी का प्रभाव विनिर्माण क्षेत्र तथा उनके वैष्विक व्यापार पर पडा हुआ है. 2008 के अंतीम त्रैमास में वैष्विक उत्पादन में अप्रत्याषित रूप से 5 प्रतिषत की गिरावट दर्ज हुई है. सालाना रूप से 21 प्रतिषत की गिरावट देखी गयी है. जनवरी 2009 में विकासषील देषों में 2.3 प्रतिषत तथा विकसित देषों में 17.3 प्रतिषत से औद्योगिक उत्पादन कम हुआ है. पुंजीगत वस्तुओंका उत्पादन करनेवाले विष्व के देषोंमें जापान में 34 प्रतिषत, जर्मनी में 22 प्रतिषत तथा दक्षिण कोरिया में 12 प्रतिषत की गिरावट हुई है. भारतमेंभी लगभग 8 प्रतिषत के आसपास यह गिरावट दर्ज की गयी है.

2. *प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भारी गिरावट* :- विष्व बैंक के मतानुसार 2009 में विकासषील देषों में प्रत्यक्ष विदेषी निवेष में 30 प्रतिषत की गिरावट होगी ऐसा अनुमान है, ऐसा होने का प्रमुख कारण यह है कि, बहुराष्ट्रीय कंपनियोंद्वारा प्रत्यक्ष विदेषी निवेषकी स्थिती के पैमानेपर स्थायी तथा अंतराल आस्थीयोंमें निवेष करना है. लगभग सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियोंकी लाभप्रदता में कमी आयी है. वैष्विक स्तर पर वस्तुओंकी किमतोंमें हो रही गिरावट ने प्रत्यक्ष विदेषी निवेष प्रवाह को हतोत्साहित किया है. उर्जा क्षेत्र की अनेक कंपनियोंने अपनी निवेष योजनाओंको सिमित कर दिया है. वैष्विक निवेषक प्रायः विकसित देषों में राष्ट्रीयकरण की नीतियोंको लेकरभी आषंकित है. विदेषी प्रत्यक्ष निवेष को आकर्षित करने में भारत का स्थान 13 वा रहा हैं, अर्थात भारत में प्रत्यक्ष विदेषी निवेष में कमी आयी है.

3. *संसाधनोंकी कमी* :- विष्व बैंक के आंकडे दर्षाते है कि इस वित्तीय संकट के कारण विकासषील अर्थव्यवस्था की ओर मौद्रीक प्रवाह, विदेषी प्रत्यक्ष निवेष, पोर्टफोलिओ निवेष, अनुदान एवम् सहायता आधे से भी कम रह गए है. विष्व के निर्धन देष अपेक्षाकृत लंबी अवधी तक आर्थिक मंदी में फसें रहेंगे, क्योंकि इन देषों की सार्वजनिक एवं निजी कंपनियोंके पास वांछित संसाधन नही होंगे. भारत में संसाधनों की कमी पहलेसेही होने से यह संकट और भी गहरा हुआ है.

4. *सकल घरेलु उत्पाद में गिरावट* :- वैष्विक मंदी के कारण समग्र रुप से घरेलु उत्पाद में 2009 में घटकर 2. 9 प्रतिषत रह जाने की संभावना है, तथा विष्व व्यापार में 10 प्रतिषत की कमी आ सकती है. युरोप तथा एषिया में 5 प्रतिषत की कमी आएगी. भारत जैसे देषों के विदेषों में कार्यरत श्रमिकोंद्वारा स्वदेष भेजे जानेवाले अंतरणों एवम् विदेषी प्रत्यक्ष निवेष में भारी गिरावट आयी है. एषिया में वैष्विक मंदी का सबसे घातक प्रभाव थायलैंड पर पडा है. भारत के सकल घरेलु उत्पाद में लक्षणीय गिरावट देखी गयी है.

5. *विदेशी व्यापार में गिरावट* :- वैष्विक मंदी के प्रभाव से कोई भी देष अछूता नही रहा है. विष्व का प्रत्येक देष किसी न किसी रुप से अमेरिका के बाजार से जुडा हुआ है, जिसके परिणामस्वरुप अमेरिका के साथ साथ इन देषों के विदेषी व्यापार में भी गिरावट दर्ज हुई है. आर्थिक समिक्षा के अनुसार भारत में 2008–09 के लिए 200 अरब डॉलर का निर्यात का लक्ष निर्धारित था, जो घटकर 175 अरब डॉलर रहा है, परंतु वास्तव में यह केवल 168.7 अरब डॉलर ही रहा है. जो गत साल की तुलना में 3.6 प्रतिषत की वृध्दी दर्षाता है. भारत का निर्यात 25 प्रतिषत से भी अधिक घटा है. वैष्विक मंदी के कारण भारत के निर्यातों में संवृध्दी दर काफी कम रही है. भारत की निर्यात में बडा हिस्सा रखनेवालें रत्न एवम् आभूषण उद्योग, टेक्सटाईल एवम् रेडिमेड वस्त्रोंकी हजारों इकाईयॉ बंद हो चुकी है.

6. *बेरोजगारी* :- वैष्विक मंदी का सबसे बडा असर रोजगार पर हुआ है. भारत जैसे विषाल जनसंख्यावाले देषमें बेरोजगारी की समस्या पहले से ही गंभीर है, वैष्विक मंदी ने इस समस्या को अधिक व्यापक बना दिया है. रत्न, आभुषण, वस्त्रोद्योग की लाखों इकाईयॉ बंद हो जाने से कई लाख लोगों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पडा है और जो लोग विदेषों में नौकरी हेतू गए थे उनमें से कई लोग अपने देषमें वापस आए है. इसका परिणाम यह हुआ की, भारत में बेरोजगारी कि समस्या और अधिक गंभीर बन गयी. विदेषों में भारतीय

लोगोंके लिए रोजगार के अवसर काफी कम हो गए है.

7. ***मॉग में कमी*** **:-** अमेरिकाके वॉलस्ट्रीट सहित दुनियाभर के षेअरबाजारोंमें सूचिबध्द कंपनियों के षेअरों में गिरावट दर्ज होनेपर वैष्विक मंदी की वास्तविकाता सामने आयी है. दुनियाभर की सॉफ्टवेअर कंपनिया, रियल इस्टेट क्षेत्र, टेक्सटाईल, अधोरचना, हवाईसेवा, बैंकिंग सेवा तथा पर्यटन क्षेत्र आदी क्षेत्रोंपर बुरा प्रभाव पडने से संकटग्रस्त कंपनियोंमें वेतन तथा उत्पादन में कटोती के साथ साथ नोकरीयोंको घटाने का दौर भी षुरू हुआ है. इसका बुरा असर बाजारोंपर देखनेको मिला है. लोगोंद्वारा बाजारोंमें वस्तुओंकी मॉग कम होने लगी है. होटल, रेस्टॉरंट, षॉपिंग कॉम्प्लेक्स तथा षोरूम ग्राहकोंकी राह जोहने लगे है. कई बडे उद्योगपतीयों ने अपने अरबों डॉलर गवाए है. भारत के षीर्ष 10 उद्योगपतीयों की बात करें तो 2008 के दौरान उन्होंने 130 अरब डॉलर गवाएँ है. 28 अक्तूबर 08 का दिन वैष्विक पूँजी बाजार के लिए काला दिन साबीत हुआ है. ग्लोबल रेटिंग एजन्सी तथा वित्तीय आकडों को उपल्बध करानेवाली स्टॅडर्ड ॲन्ड पुअर्स के अनुसार वैष्विक मंदी के चलते 2008 में निवेषकोंको लगभग 11 हजार अरब डॉलर की हानी उठानी पड सकती है.

8. ***भुगतान संतुलनपर बुरा प्रभाव*** **:-** वैष्विक मंदीने भारत के व्यापार संतुलन तथा भुगतना संतुलन को भी बुरी तरहसे प्रभावित किया है. रिझर्व बैंक के अनुसार 2008 की पहली तिमाही में चालू खाते का घाटा 14.64 अरब डॉलर रहा है. तथा भुगतान संतुलन में कूल घाटा 17.88 अरब डॉलर रहा है, जो पिछले साल की तुलना में अधीक है, अर्थात भारत के भुगतान संतुलनपर वैष्विक मंदीका गहरा बुरा प्रभाव पडा है.

सुझाव (Suggestions) **:-** वैश्विक मंदी और सामान्य आदमी

वैष्विक मंदी के परिप्रेक्षमें हमें इस तरह के कदम उठाने चाहिए की, जिससे हम मंदी के प्रभाव से कम से कम प्रभावित हो सके. हमारी नजरमें इस मंदी की स्थितीमें निम्न बातोंपर अमल करना आवष्यक हैं.

1. मंदी की इस स्थितीमें हमें कम से कम ऋण लेने चाहिए, विषेष कर मकान आदी प्रॉपर्टी की खरिदारी नकद रुपसे करनी चाहिए. 2. हमें अपने सभी प्रकार के ऋणों के भुगतान की अदायगी नियमित और आवष्यक रुप से करनी चाहिए. 3. मंदी के इस दौर में षेअर मार्केट तथा अन्य नयी खरीदारी को कम से कम करना चाहिए. 4. मंदी के इस दौर में कोई भी निवेष साच समझकर तथा परखकर करना चाहिए. 5. मंदी के इस वातावरण में इस समय प्रॉपर्टी आदी संपत्ती को बेचना लाभदायक हो सकता है. 6. हमें आरामदायक खर्चों तथा अन्य अनावष्यक खर्चोंपर प्रतिबंध लगाना चाहिए. 7. वर्तमान परिस्थिती में अपना वर्तमान व्यवसाय या नोकरी को नही बदलना चाहिए. 8. मंदी का सामना करने के लिए हम सभी को सरकारी की नीतियोंका समर्थन और सहयोग करना चाहिए. 9. आर्थिक बातोंके साथसाथ हमें अपने स्वास्थ्य की ओरभी विषेष रुप से ध्यान देना चाहिए.

इस तरह से कुछ आवष्यक कदम उठाकर हम मंदी की मार से बच सकते है.

निष्कर्ष (Conclusion) **:-** उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि वैष्विकरण ने इस मंदी की आंधी को सारे विष्व में फैलानेमें अपना बडा योगदान दिया है. वैष्विक मंदी के कई गंभीर प्रभाव विभिन्न देषोंको भुगतने पड रहे है. विष्व के विभिन्न देषोंने अमेरिकी कंपनियों तथा वित्तीय संस्थाओं में भारी मात्रा में निवेष किया है, इसलिए वे सभी इस लहेर की चपेट में आ गए है. इसके बावजूद भी भारत में वध्दी दर 2008–09 के विष्व बैंक के अनुसार 6.1 प्रतिषत रहने का अनुमान है, जो वास्तव में इससे भी अधिक अर्थात 6.7 प्रतिषत रही है. यह हमारी अर्थव्यवस्था के मजबूती का लक्षण है. भारत में मंदी की मार कम रहने का एक प्रमुख कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का कृषी व्यवसायपर निर्भर होना है. इसलिए हमे अपने कृषी व्यवसाय की ओर दुर्लक्ष नही करना चाहिए बल्कि उसके विकास की ओर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए. मंदी के लिए विकसित देषों की फिजुलखर्चीही जिम्मेदार है, अतः हमें अपने गिरेबान में झॉकना पडेगा और अपने अनियंत्रीत खर्चों तथा उपभोगवादी प्रवृत्तीपर लगाम लगाकर पुंजीवाद की अपेक्षा मिश्र अर्थव्यवस्थाकोही अपनाना चाहिए ऐसा मेरा मत है.

संदर्भ ग्रंथ

* आर्थिक समिक्षा 2008–09 *रिझर्व बैंक बुलेटिन 2008–09 *जी–20 षिखर सम्मेलन की रिपोर्ट *प्रतियोगिता दर्पण वार्षिक अगस्त 2009 *रिव्हू ऑफ द इकॉनॉमी 2008–09 *केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन के आंकडे *वैष्विक विकास वित्त रिपोर्ट 2009 *स्थूल अर्थषास्त्र – ग. ना. झांबरे *जागतिक मंदी–स्वरूप व उपाय – डॉ. जे. एफ. पाटील *जागतिक अर्थव्यवस्था – मधुसुदन साठे